International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 778-781

महात्मा गाँधी : एक अहिंसक क्रान्तिकारी

दुर्गेश नन्दन त्रिपाठी
एम0ए0, एम0एड्0, यू0जी0सी0 नेट (जे0आर0एफ0) शिक्षाशास्त्र, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

गाँधीजी पर वाद विवादों और चर्चाओं के दौरान उनके दर्शन की सार्थकता दिखाने के लिए कुछ सिद्धान्त हमारे सामने आ खड़े होते हैं। इनमें से कुछ हैं सत्य, अहिंसा, नैतिकता और आध्यात्मिकता। संभवतः किसी अन्य विचारक, दार्शनिक, धार्मिक या राजनीतिक नेता की अपेक्षा गाँधी जी ने इन सिद्धान्तों को प्रभावशाली ढंग से आपस में मिलाया है। गाँधीजी के नीतिशास्त्र की अंतर्निहित विशेषता यह है कि इसमें संपूर्ण समाज के व्यापक हित को सुनिश्चित करने के लिए व्यक्ति में बलिदान की भावना पर बल दिया गया है।

इस विचार के कारण गाँधी जी अन्य विचारकों से अलग हैं। और हम यह सोचने के लिए बाध्य हो जाते हैं कि गाँधीजी की समाज के प्रति क्या अंतर्दृष्टि थी और उनका मानना था कि साध्य की प्राप्ति शुद्ध साधनों से ही हो सकती है गाँधीजी ने नैतिक मूल्यों का निर्धारण किया, इस बारे में उनके निकट सहयोगी श्रीमननारायण के शब्दों को यहां उद्धृत करना उचित ही होगा, 'इसमें कोई शंका नहीं है कि हमारे देश ने पिछले दो दशकों में राष्ट्रीय विकास के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय परिणाम प्राप्त किए हैं। हमारी अपनी उपलब्धियों को कम करने आंकना या इनके महत्व को कम समझना अनुचित ही होगा। फिर भी, तथ्य है कि हम अपनी कुछ मूलभूत समस्याओं–भूख, गरीबी और बेरोजगारी को सुलझा नहीं पाये हैं। इसके अतिरिक्त, आर्थिक प्रगति की दर को बढ़ाते हुए और उद्योग व कृषि में उत्पादन वृद्धि करते हुए हमने लोगों के नैतिक स्तर को उठाने पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया।

गाँधीजी ने सदैव लोगों के जीवन स्तर को उठाने के साथ ही उनके नैतिक स्तर को ऊँचा उठाने पर भी बल दिया। गांधीजी ने हमें निरंतर रूप से चेताया है कि सिर्फ ऊंचे भवन खड़े करने, बड़ी–बड़ी फैक्टरियां लगाने और आर्थिक समृद्धि के लिए धन में बढ़ोतरी से ही राष्ट्र महान नहीं बन जाते हैं। यद्यपि ये सब व्यक्ति के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए आवश्यक है, परन्तु एक देश वास्तव में महान और सम्मान का पात्र तब बनता है जब उसके नागरिक मस्तिष्क और हृदय के उत्कृष्ट गुणों को अपनाएं। ये गुण लोगों की खुशी– खुशी राष्ट्र के व्यापक हितों के लिए अपने हित को बलिदान करने की प्रेरणा देते हैं''। गांधीजी ने धर्म और राजनीति को मिलाने के लिए काफी प्रयास किये। उनका दृढ़ विश्वास था कि धर्म व्यक्ति को नैतिक मूल्यों व सिद्धांतों के प्रति प्रेरित करता है और उसे उस मार्ग की दिशा दिखाता है जो नैतिक रूप से उचित है। जब धर्म का राजनीति में समावेश किया जाता है तब इसके व्यापक परिणाम सामने आते हैं और चारों तरफ नैतिक मूल्य छा जाते हैं। तब राजनीति में शामिल व्यक्ति इस योग्य हो जाता है वह अपने संगी साथियों की भलाई के लिए कार्य करे। गांधीजी ने सत्य की भावना में भी विश्वास प्रगट किया है और बताया कि यह धार्मिक स्रोतों से निकलती है। वे परम सत्य में विश्वास करते हैं और यह सत्य ही ईश्वर है और इस तरह उन्होंने इस सत्य को अत्यधिक महत्त्व दिया है गांधीजी ने धर्म और राजनीति में कोई अंतर नहीं किया। उन्होंने अधिकतम लोगों की अधिकतम भलाई या अन्य शब्दों में सर्वोदय या अन्त्योदय को सुनिश्चित करने के लिए धर्म और राजनीति को एक करने की बात कही है। आज के युग में राजनीति में नैतिकता और आध्यत्मिकता का ह्रास दिखता है परिणामस्वरूप भ्रष्टाचार बढ़ा, ऐसे में राजनीति में गांधीजी का नैतिक परिप्रेक्ष्य आवश्यक और रूचिकर लगता है। परन्तु गांधीजी का इन दोनों को एक करने में दृढ़ विश्वास था और इसने गांधीजी को एक जन नेता बना दिया। गांधी जी की धर्म की अवधारणा सार्वभौम और सर्वत्र छाए सत्य की भावना से ओत–प्रोत है।

जैसा कि गांधीजी ने कहा है, 'सत्य की सार्वभौम एवं सर्वव्यापी भावना के प्रत्यक्ष दर्शन वही कर सकता है जो क्षुद्रतम् प्राणी से भी उतना ही प्रेम कर सके जितना कि स्वयं को करता है और जो ऐसा करने का अकांक्षी हो, वह जीवन के किसी क्षेत्र से अपने को अलग नहीं रख सकता। यही कारण है कि सत्य, के प्रति मेरे अनुराग ने मुझे राजनीति के क्षेत्र में ला खड़ा कर दिया है और मैं बिना किसी हिचक के, किंतु विनम्रतापूर्वक यह कह सकता हूँ कि जो लोग यह कहते हैं कि धर्म का राजनीति से कोई लेना–देना नहीं है, वे यह नहीं जानते कि धर्म क्या है। गांधीजी आगे कहते हैं, 'धर्म से अलग कोई राजनीति नहीं है। धर्मविहीन राजनीति एक मृत्यु जाल है जो आत्मा का नाश करती है।' गांधीजी देश की आजादी के राजनीतिक संघर्ष के दौरान इस नैतिक आधार पर दृढ़ता से खड़े रहे। भारत के पूर्व राष्ट्रपति और प्रख्यात दार्शनिक डॉ0 एस. राधाकृष्णन ने टिप्पणी करते हुए कहा है कि ''गांधीजी के दर्शन में सारी मानवता का समावेश हो जाता है। इस प्रकार से उनके अनुसार, 'मानव गतिविधि से अलग कोई धर्म नहीं है। अनुभव की कसौटी पर वह, न तो राजनीतिज्ञ है, और न समाजसुधारक न दार्शनिक और न नैतिकतावादी बल्कि, एक ऐसे व्यक्ति हैं जो इन सबका मिश्रण है। वह उच्चतम व अधिकाधिक मानवीय गुणों से सुशोभित है और अपनी स्वयं की सीमाओं की चेतना के व अपनी विनोदशीलता की सटीक समझ के कारण अत्यन्त प्रिय हैं। यह सोचना गलत होगा कि गांधीजी के धार्मिक चिंतन स्रोत के मूल प्रकृत में हिन्दु धर्म है। व्यापक तौर पर यह माना जाता है कि गांधीजी ने सभी धर्मों की अच्छी बातों को लेकर उन्हें अपने जीवन लक्ष्य का एक अटूट अंग बनाया।''

गांधीजी ने शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य से लड़ने के लिए अहिंसा के सिद्धान्त को एक पद्धति के रूप में अपनाने पर बल दिया, यह उनकी नैतिक अवधारणा को दर्शाता है। गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका और भारत में शोषणकारी व्यवस्थाओं से लड़ने के लिए एक ऐसा शस्त्र (सत्याग्रह) 'आंख के बदले आंख' के विपरीत अपनाया है। गांधीजी का मानना है कि विरोधी को शारीरिक शक्ति से डराने की अपेक्षा नैतिक ढंग का सहारा लेकर, उसके हृदय को जीतना

चाहिए। स्वयं को पीड़ा देकर के ही ऐसा किया जा सकता हैं नैतिक शक्ति से प्रतिरोध करने पर विरोधी अपने कार्यों पर विचार मंथन करेगा और नैतिक सत्य की शक्ति के आगे घुटने टेक देगा। गांधीजी के सम्पूर्ण जीवन में यह एक आदर्श वाक्य बना रहा। नैतिक साधनों में विरोध के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार नहीं किया जाता है और किसी के विरोध व विश्वासों को उसके ऊपर जबरदस्ती थोपा नहीं जाता है। गांधीजी कभी ब्रिटिश शासन के गहरे समर्थक थे और मानते थे कि ब्रिटिश लोग आधुनिक सभ्यता के प्रवर्तक है। मगर फिर गांधीजी भारतीय सभ्यता के उच्च आध्यात्मिक मूल्यों की ओर मुड़े। तब से ये मूल्य गांधीजी के नैतिक आधार बन गए। इनके द्वारा उन्होंने भारतीय जन मानस की सोई आत्मा को जगाया। अय्यर कहते हैं कि गांधीजी को इस बारे में कोई भ्रम नहीं था कि शक्ति चाहने और अपने हितों को अहवादी ढंग से बढ़ाने में लगे बिना भी राज्य का सुधार किया जा सकता है। गांधी जी को व्यक्तियों की नैतिक सर्वोच्चता की भावना में और भलाई के लिए व्यवस्था में परिवर्तन हेतु उनकी सामूहिक इच्छा शक्ति में अटूट विश्वास था। उपरोक्त कारणों से गांधीजी ने धार्मिक सिद्धांतों को आत्मसात करने वाले सर्वोच्च सत्ताधारी राज्य का समर्थन किया जो राजनीति में नैतिकता व आध्यात्मिकता का प्रचार करे। ऐसा नहीं है कि गांधीजी के राजनैतिक विचारों में ही नैतिक बातें शामिल हों। गांधीजी का तरीका भी नैतिकता व आध्यात्मिकता से पूरी तरह ओत–प्रोत था। अपने शत्रु (विरोधी) की उसके संकट के समय सहायता करने के लिए उच्च नैतिक व आध्यात्मिक विश्वास की आवश्यकता होती है। दक्षिण अफ्रीका में बोअर युद्ध के समय गांधी ने घायल सैनिकों की सेवा करने के लिए सरकार की सहायता की और स्वेच्छा से मानवतावादी सेवाएं दी। यह एक विडम्बना ही थी कि उसी सरकार ने गांधीजी और उसके देशवासियों को उनके जीवन के न्यायसंगत अधिकारों से वंचित कर दिया था। गांधीजी के विरोधियों तक ने उनके नैतिक आधार को प्रोत्साहन व पुरस्कार दिया, यह इस बात को सिद्ध करता है कि गांधीजी के तरीके मौलिक और निष्कपट थे। दक्षिण अफ्रीका के दिनों में जे.सी. स्मट्स, गांधीजी के घोर विरोधी थे। स्मट्स ने गांधीजी को उनकी नैतिक सर्वोच्चता के लिए श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा है कि यह मेरा सौभाग्य था कि मैं उस व्यक्ति का प्रतिद्वंद्वी था जिसका मैं काफी आदर सम्मान करता था। दक्षिण अफ्रीका में उस संघर्ष की छोटी सी अवधि में गांधीजी के चरित्र की बहुत–सी विशेषताएं उभकर सामने आई और गांधीजी ने भारत में व्यापक स्तर पर किए कार्यों में उनका प्रदर्शन किया। गांधीजी इन कार्यों को करते हुए मानवीय परिस्थिति को कभी अनदेखा नहीं किया, न अपना संयम खोया और घृणा के सामने घुटने भी नहीं टेके। कठिन परिस्थिति में भी अपना हास्य विनोद बनाये रखा। अफ्रीका और बाद में भारत में गांधी ने जिस ढंग व भाव से बर्बर व पाश्विक शक्ति का, सामना किया वह सराहनीय है'' गांधीजी ने कई कारणों से राजनीति के आध्यात्मिककरण पर बल दिया है। प्रथम, वह राजनीतिक जीवन में शुद्धिकरण लाना चाहते थे, ऐसा होने से पतन या अनैतिकता के लिए स्थान नहीं रहेगा। दूसरे, धर्म व राजनीति का एकीकरण (नैतिक सर्वोच्चता का समावेश) ईमानदारी से मानव की सहायता करने के लिए आवश्यक है। तृतीय, समाज की स्थापना का मार्ग प्रशस्त होगा। जहां सदैव के लिए सत्य व अहिंसा का शासन होगा और शान्ति व व्यवस्था की स्थापना होगी अंत में, राजनीतिक का आध्यात्मिकरण उच्चतर उद्देश्य–बिना किसी भेदभाव के–सबके उत्थान के लिए आवश्यक है। जैसा कि गांधीजी ने कहा है, ''सारी मनुष्य जाति के साथ आत्मीयता कायम किए बिना मेरी धर्म–भावना सन्तुष्ट नहीं हो सकती। और यह तभी संभव है जबकि मैं राजनैतिक मामलों में भाग लूँ। आज की दुनिया में मनुष्यों की प्रवृत्ति एक ओर अविभाज्य है.....मानव–हित की प्रवृत्ति से भिन्न कोई धर्म भावना से रहित दूसरी तमाम प्रवृत्तियां नैतिक आधार से विहीन है और जीवन को केवल अर्धहीन धांधलीबाजी और हल्लेगुल्ले वाला' बना डालती है।'' गांधीजी के अनुसार शक्ति विधान सभाओं में नहीं बल्कि जनता में निहित होती है।

गांधी जी द्वारा सदैव नीतिशास्त्र पर जोर दिया गया गांधीजी ने आधुनिक सभ्यता को शैतान इसलिए कहा है, क्योंकि ब्रिटिश अंग्रेजों ने अपने भौतिक लाभ के लिए व्यापक स्तर पर धन का निकास इंग्लैण्ड को किया और भारत हर क्षेत्र में गरीब होता चला गया। गांधीजी ने ब्रिटिश साम्राज्य की घोर आलोचना की है, क्योंकि उन्होंने औपनिवेशिक प्रजा को सत्ता, धन और उनके भौतिक सुख सुविधाओं से वंचित करके अपनी भलाई व लाभ को ही देखा। ब्रिटिश साम्राज्य शक्ति की भूख के कारण विवेक और बुद्धि से कार्य नहीं कर सकी और उसने भारत की जनता पर अनगिनत व अकथनीय जुल्म ढाए।

गांधीजी अंग्रेजी शासन पर अभियोग लगाकर रूके नहीं, बल्कि उन्होंने भारतीय जनता की भी कटु आलोचना की है। भारतीय जनता उन दिनों नैतिक व आध्यात्मिक रूप से जागृत नहीं थी और अपनी संस्कृति व सभ्यता पर कम गर्व कर रही थी और उसने भारत को अंग्रेजों के हाथों में जाने दिया। इस प्रकार शासन भारतवासियों से जोर जबर्दस्ती करने लगा। गांधीजी ने इस दयनीय स्थिति का कारण जनता की नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों में कमी को बताया है। इस स्थिति से कैसे छुटकारा पाया जाए, इस पुस्तक में गांधीजी ने दो मुख्य संदेश दिए हैं:– प्रथम आधुनिक सभ्यता की आलोचना और देशज संस्कृति व मूल्यों की उपयोगिता को मान्यता देना। द्वितीय, ब्रिटिश सत्ता के मुकाबले के लिए हिंसात्मक तरीकों को छोड़ना और निर्णायक नैतिक शक्ति के रूप में अहिंसा का प्रयोग करके शत्रु (विरोधी) को देश से बाहर करना। गांधीजी ने ऐसे भारत की कल्पना की थी जो जाति रहित हों इसके लिए उन्होंने जाति बंधन के जकड़े हिंदुओं से आग्रह किया कि वे अपना हृदय बदलें और अपने घोर गरीबी में रह रहे और समाज में अलग थलग पड़े कम सुविधा सम्पन्न भाइयों को अपनाएं।

उनकी इस संकल्पना में नीतिशास्त्र भी है। इसके कई कारण हैं प्रथम कम सुविधा सम्पन्न लोगों को मुख्यधारा के जीवन, जैसे मंदिर प्रवेश या नीति निर्माण में भागेदारी में भाग लेने का परिणाम यह होगा कि अमीर वर्ग आत्म–सुद्धिकरण की प्रक्रिया से गुजरेगा। यह प्रक्रिया सामाजिक भलाई और व्यक्ति के कल्याण को बढ़ाने के लिए अत्यंत आवश्यक है। द्वितीय, जहां आम आदमी को पेट भर खाने को नहीं मिलता है वहां अमीर वर्ग गरीब वर्ग का शोषण और अन्याय ही करता है। मगर गांधीजी के कल्पना में अमीर वर्ग अपनी समृद्धि को गरीब वर्ग से बांटते हुए स्वार्थहीनता का प्रदर्शन करेंगे। इस प्रकार से, व्यापक स्तर पर, लोगों में असीम प्रेम का प्रसार होगा। भारतीय जनता में इस नैतिक व सामाजिक पुनरूत्थान के लिए गांधीजी का रचनात्मक कार्यक्रम एक कदम था। उन्होंने अठ्ठारह सूत्रीय कार्यक्रम जैसे, ग्रामीण स्वच्छता, स्वास्थ्य देखभाल और जनजातिय कल्याण सामने रखें गांधीजी ने तर्कपूर्ण ढंग से कहा है कि सामाजिक कल्याण के बिना भेदभाव बढ़ेगा और इस प्रकार से समाज में असंतुलन पैदा होगा। सामाजिक कल्याण को सुनिश्चित करने और सर्वोदय हासिल करने की इच्छा के बिना लक्ष्य हासिल करने के लिए लोग राज्य की सत्ता के विरूद्ध हिंसा के लिए उठ खड़े होंगे इस प्रकार की स्थिति में, गांधीजी का सुझाव यह है कि हिंसात्मक साधनों की अपेक्षा सत्याग्रह जैसे शस्त्र

का प्रयोग किया जाए। यहां भी गांधीजी इस बात पर बल देते हैं कि न्यायसंगत लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए नैतिक साधनों का ही प्रयोग करना चाहिए और यदि उद्देश्य सर्वोदय की प्राप्ति है तो उसे अन्यायपूर्ण नीतियों व कार्यक्रमों के विरूद्ध हिंसा का प्रयोग करने की अपेक्षा सत्याग्रह से प्राप्त किया जाना चाहिए। यदि राज्य जन विद्रोह को शक्ति के द्वारा कुचलता है तब गांधीजी ने अहिंसात्मक प्रतिरोध करने का सुझाव दिया है क्योंकि इस प्रतिरोध का कोई विकल्प नहीं है। अगर नागरिक हिंसक प्रतिरोध करते हैं तो राज्य को अधिक हिंसा करने का अवसर मिल जाता है। ऐसे में गांधीजी का नैतिक शास्त्र न केवल हिंसा का कारगर ढंग से मुकाबला करता है बल्कि यह एक रणनीति भी है जिसके अन्तर्गत विरोधी समस्या के समाधान को ढूंढने के लिए बाध्य हो जाता है। गांधीजी ने सदैव इस बात पर बल दिया कि नैतिक शक्ति का कोई विकल्प नहीं है बिलग्रामी का कहना है कि गांधीजी का इनकार, प्रतिरोध और सविनय अवज्ञा के द्वारा एक कला का निर्माण किया है। परन्तु प्रतिरोध आलोचना की भांति नहीं है। इससे तो शुद्ध हृदय से ही किया जा सकता है।'' यहां यह उल्लेख करना आवश्यक हो जाता है कि गांधीजी का सत्याग्रह नैतिक रूप से उच्च है, लिंग या आयु के भेदभाव के बिना इसे आसानी से व्यवहार में लाया जाता है। यह हिंसा या चोट से स्वतंत्र है, शक्तिशाली या पाशविक बल का मुकाबला करने के लिए आवश्यक है और इसकी नैतिक सर्वोच्चता के कारण इसका इनकार नहीं किया जा सकता है। राज्य नागरिक स्वतन्त्रता को सुनिश्चित करने के साथ–साथ सामाजिक उद्धार को भी बढ़ावा देता है। इसलिए राज्य के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह स्वयं को सत्य व अहिंसा के आधार पर संगठित करे। नागरिक को चाहिए कि वे राज्य की सम्पूर्ण शक्ति को स्वीकार करने की अपेक्षा सम्पूर्ण नैतिक मूल्यों और शक्ति का प्रयोग कर इसे संस्थानीकृत करे। गांधीजी ने राज्य या लोगों द्वारा कुछ सन्दर्भ में शक्ति का प्रयोग करने की संभावना से इनकार नहीं किया है, परन्तु उनका दृढ़ विश्वास है कि समाज की प्रकृत अहिंसक ही होनी चाहिए और यहां शक्ति के प्रयोग की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। गांधीजी नैतिकता का व्यवहार करते थे और उनका अहिंसा की नैतिक सर्वोच्चता में विश्वास था।

राघवन अय्यर का कहना है कि ब्रहमाण्ड में नैतिक नियम की सर्वोच्चता हमारे लिए यह आवश्यक कर देती है कि हम नैतिकता के मूलभूत सिंद्धांतों को अपनाएं। 'इस सन्दर्भ में उन्होंने गांधीजी को भी उद्धृत किया है, 'सिद्धांत तो सिंद्धांत ही है और अगर हम व्यवहार में इनका पालन नहीं कर पाते तो भी किसी भी परिस्थिति में इनका उल्लंघन नहीं किया जाना चाहिए और हमारा प्रयास सिद्धांत को व्यवहार में लाने का होना चाहिए और यह प्रयास चेतन और परिश्रम आधारित होना चाहिए।' इस सन्दर्भ में गांधीजी का योगदान यह रहा कि उन्होंने 'एकादश व्रत' का प्रतिपादन किया। यह व्यवहार का एक कठोर नियम है, जिसका पालन सत्यग्रहियों, आश्रमवासियों और जो इसका पालन करना चाहे उसे करना होता है। 'गांधीजी ने स्वयं अपने जीवन के विभिन्न चरणों में इन सिद्धांतों का पालन करते हुए कठिनाइयों का सामना किया। यह गांधीजी की आत्म–शुद्धि का ही तरीका था जिसके द्वारा उन्होंने राजनैतिक व सामाजिक उद्देश्य के लिए अपनी महत्वपूर्ण ऊर्जाओं को अभिव्यक्ति प्रदान की। गांधीजी कोई बात बिना व्यवहार में लाए हुए कोई उपदेश नहीं देते थे पहले वे किसी बात को व्यवहार में लाते तब अन्य जनों को उसे करने के लिए कहते। उन्होंने अन्य जनों के सामने आदर्श रखा जिसे कि वे अपना सकें। एक ऊंचे आदर्श और नैतिक अनुशासन में रहने वाला व्यक्ति ही प्रभावशाली ढंग से अहिंसक संघर्ष को नेतृत्व प्रदान कर सकता है। गांधीजी ने ऐसा बनने का प्रयास किया और नीति शास्त्र के सिद्धांतों पर बल दिया। जैसा कि अय्यर ने कहा है कि, ''जब तक सामाजिक कार्यकर्ताओं की बढ़ती संख्या और राजनैतिक योद्धाओं द्वारा आश्रम जीवन के आदर्शों को स्वीकार नहीं किया जाता है और सार्वजनिक जीवन में फिर से लागू नहीं किया जाता है तब तक पूर्ण मूल्यों को संजोया नहीं जा सकता है या समाज में और राजनीति में इनका समर्थन इस प्रक्रिया में आवश्यक साधनों के रूप में आत्म–शुद्धि और आत्म अनुशासन के लिए व्रत का संकल्प लेना होता है। इसके बिना राजनीति का शुद्धिकरण और समाज का क्रान्तिकारी परिवर्तन संभव नहीं है। गांधीजी केवल राजनीतिक लक्ष्य के लिए ही नहीं लड़ रहे थे, बल्कि उनका संघर्ष लोगों के सामाजिक उत्थान और उनकी मुक्ति, आर्थिक आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण से भी जुड़ा था।

गांधीजी की खूबी यह रही कि उन्होंने इन सबको एक सामूहिक उद्देश्य में बदल दिया, जिसे अहिंसक ढंग से हासिल करना था। उनके अनुसार किसी राष्ट्र की राजनीतिक स्वाधीनता का कोई अर्थ नहीं है, जब तक उसके साथ सामाजिक उत्थान न जुड़ा हो। अगर यह स्वाधीनता सांस्कृतिक गौरव और सम्मान को बढ़ावा न दे तो यह अस्वीकार्य है। इसलिए गांधीजी ने प्रभावशाली ढंग से इन्हें एक उद्देश्य में पिरो दिया। गांधीजी मानते थे कि शुद्ध लक्ष्यों की प्राप्ति शुद्ध साधनों से ही की जा सकती है इसलिए उन्होंने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति के लिए नैतिकता व आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलने का समर्थन किया।

गांधीजी को सत्य, अहिंसा, नैतिकता और आध्यात्मिकता जैसे सिद्धान्तों का प्रवर्तक कहा जा सकता है। इनकी नैतिकता की संकल्पना व्यक्तिगत व्रत या अनुभव तक सीमित नहीं है। इस संकल्पना में राष्ट्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के व्यापक उद्देश्य समाहित है। गांधीजी ने व्यवस्थित ढंग से निरंतर इस बात पर बल दिया कि राजनीति में धर्म का समावेश किया जा सकता था। गांधीजी का विश्वास था कि धर्म नैतिक बातों को राजनीति में लाएगा और आध्यात्मिकता सेवा भावना का प्रचार करेगा। व्यक्ति सेवाभाव से कार्य करते हुए फल की इच्छा नहीं करेगा। धर्म और राजनीति का मेल अनासक्ति धारणा पर आधारित है। साथ ही इसमें सामाजिक भलाई पर भी बल दिया गया है। वर्तमान युग में धर्म व राजनीति के एकीकरण पर बातें करना असंभव सा लगता है। इनका शांतिपूर्ण ढंग से एकीकरण होने की अपेक्षा, यह देखा गया है कि राजनीति धर्म को बांट रही है। सामाजिक क्षेत्र में, धर्म के मामले में भी, राजनीतिक लाभ उठाने के लिए विभाजन दिखाई देते हैं। जातीय राजनीति ने भी अपना विकृत चेहरा प्रस्तुत किया है। इन सबने मिलकर समाज के सौहार्दपूर्ण ताने–बाने को चुनौती दे डाली है।

भ्रष्टाचार और अपराधीकरण, शक्ति व सत्ता की लालसा, धन का असमान वितरण और जनता के कल्याण की अपेक्षा करना, ये सभी गंभीर मुद्दे बनकर उभरे हैं। नैतिकता का अभाव और आध्यात्मिक दृष्टिकोण की कमी सार्वजनिक संस्थाओं की पवित्रता पर चोट पहुंचा रहे हैं। इस संकट का सामना करने का एक तरीका यह है कि समाज में गांधीवादी नीतिशास्त्र और आध्यात्मिकता का फिर से परिचय कराया जाय। परन्तु कुछ ही लोग गांधीजी के मार्ग पर चलने के हैं। (गांधीजी ने एक बार कहा था कि शक्ति व सत्ता की लालसा ने व्यक्ति को जकड़ लिया है।) इसी संदर्भ में गांधीजी ने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जिसमें शक्ति किन्हीं संस्थाओं को न देकर जनता को दी जायेगी।

व्यवहार में गांधीजी के नीतिशास्त्र सम्बन्धी विचारों को फिर से लागू करना एक आदर्श और यहां तक कि एक यूटोपिया की लगता है,

परन्तु फिर भी नैतिकता की कमी से त्रस्त इस समाज व राजनीति के लिए ऐसा करना ही होगा। प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंसटाईन के प्रसिद्ध उद्धरण को यहां दिया जाना आवश्यक हो जाता है कि ''राजनैतिक इतिहास में गांधीजी का एक विशिष्ट स्थान है। उन्होंने शोषित जनता के मुक्ति संघर्ष के लिए पूर्ण से एक नई और मानवीय तकनीक की खोज की और इस संघर्ष को अपनी पूरी ऊर्जा व लगन से आगे बढ़ाया। सभ्य संसार के द्वारा उन्होंने चिन्तनशील लोगों पर एक नैतिक प्रभाव डाला और वर्तमान युग की अपेक्षा, जो कि पाशविक शक्ति को बढ़ा चढ़ाकर दिखा रहा है, अधिक स्थाई है। राजनेताओं का कार्य तब तक ही स्थाई रहता है, जब तक वे निजी उदाहरण और शिक्षाप्रद प्रभाव द्वारा अपने लोगों की नैतिक शक्तियों को जागृत व सशक्त करते हैं।

गांधी जी अपने सम्पूर्ण जीवन काल में पारस्परिक सहयोग, सामाजिक न्याय, सभी के लिए स्वतंत्रता और समानता के समर्थक और अग्रदूत रहे। किसी भी समाज के ये सरोकार सार्वभौम सरोकार हैं और आज के इस युग में जहां चारों ओर हिंसक संघर्ष, सामाजिक तनाव और पहचान का संकट विद्यमान है ये सरोकार पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक बन गये हैं। शान्ति, वार्ता, समन्वय, त्याग और व्यक्तिगत गरिमा के मूलभूत तत्व उनके उपदेश आंतरिक आयाम है, जो स्थाई, सार्वभौम और अपरिवर्तनशील है। वर्तमान वैश्विक समाज में विभिन्न समूहों के साथ शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व से रहने के लिए इनको आत्मसात् करना आवश्यक है। हम भाग्यशाली है और हमें कृतज्ञ होना चाहिए कि नियति ने हमें ऐसा चमकता सितारा दिया है जो आने वाली पीढ़ियों का मार्ग दर्शन करता रहेगा।

आज के संदर्भ में भी उनके कार्य व विचार अनुकरणीय हैं। वह व्यक्ति जिसे जातीय व नस्लीय भेदभाव के कारण रेल के डिब्बे से बाहर फेंक दिया गया हो। वह इतिहास के पृष्ठों में शहीद होकर अमर हो गया है। उसका जीवन प्रयोगों की एक निरंतर कड़ी था। अधिकांश धार्मिक व आध्यात्मिक ग्रंथों में जिस सत्य की बात कही गई है वह उसी उच्च सत्य के साथ प्रयोग कर रहा था। भेदभाव का मुकाबला करने के लिए उनके पास सत्य की शक्ति थी, उनकी पद्धति अहिंसक थी, उनका दर्शन नैतिक था, उनकी मजबूती थी सत्य व अहिंसा विभिन्न धर्मों के ग्रन्थों ने उनके विचार व दर्शन को प्रभावित किया। इस प्रकार निरन्तर सत्य में उनका विश्वास दृढ़ होता गया। उन्हें सहादत पाये हुए कई दशक बीत गये हैं मगर उनके बताये हुए सिद्धान्त आज भी एक स्वस्थ समाज के संचालन के लिए तथा सम्पूर्ण मानवता को सही दिया में गतिशील रखने के लिए अत्यधिक वांछनीय है।

वर्तमान विश्व में व्याप्त बहुत सी समस्याओं जैसे पर्यावरण का ह्रास, आतंकवाद, साम्प्रदायिक झगड़े व मनमुटाव व आर्थिक समस्याएँ, सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक गिरावट इत्यादि समस्याओं का निदान हमें गांधी दर्शन में निहित नैतिक विचारों के द्वारा मिल सकता है।

अतः आवश्यकता है इन नैतिक विचारों को शिक्षा के माध्यम से न केवल अपने वर्तमान समाज में बल्कि भविष्य के कर्णधारों के मानस पटल पर भी अंकित किया जाय। जिससे हमारा वर्तमान समाज तथा आने वाला समाज दोनों ही उत्तरोत्तर बेहतर हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आत्रेय बी0एल0। भारतीय नीतिशास्त्र का इतिहास
2. गांधी मोहन दास करम चन्द। हिन्द स्वराज (सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन) वर्ष : 2010
3. गांधी मोहनदास करमचन्द। सत्य के प्रयोग (सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन) वर्ष : 2010
4. गांधी मोहन दास करम चन्द। सर्वोदय (सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन)वर्ष : 2011
5. गांधी मोहन दास करम चन्द। अनासक्ति योग (नव जीवन प्रकाशन मंदिर) वर्ष : 2009
6. जैन डा0 प्रतिभा। गांधी चिन्तन
7. लुई फिशर। गांधी की कहानी (सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन) वर्ष : 2011
8. पाण्डेय डा0 संगम लाल। गांधी का दर्शन
9. पाठक डा0 राममूर्ति। भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा अभिमन्यु प्रकाशन वर्ष : 1997
10. रोमां रोलां। महात्मा गांधी जीवन और दर्शन (लोक भारती प्रकाशन) वर्ष : 2009
11. शाह दशरथ लाल। गांधीजी के एकादश व्रत (सर्व सेवा संघ प्रकाशन) वर्ष : 2002
12. सिंह डा0 वी0पी0। महात्मा गांधी का नैतिक दर्शन
13. तिवारी पं0 राम दयाला। गांधी मीमांसा
14. उपाध्याय हरिभाउ। बापू कथा 1920–1948
15. विनोबा। शुचित्रा से आत्मदर्शन (सर्व सेवा संघ प्रकाशन) वर्ष : 1997
16. विनोबा। राम–नाम का चिन्तन (सर्व सेवा संघ प्रकाशन)
17. वर्ल्ड फोकस, अक्टूबर 2010
18. वर्ल्ड फोकस, अक्टूबर 2011
19. वर्ल्ड फोकस, अक्टूबर 2012